IB DIPLOMA PROGRAMME
PROGRAMME DU DIPLÔME DU BI
PROGRAMA DEL DIPLOMA DEL BI

M06/2/ABHIN/SP1/HIN/TZ0/XX/T

22062307

HINDI B – STANDARD LEVEL – PAPER 1
HINDI B – NIVEAU MOYEN – ÉPREUVE 1
HINDI B – NIVEL MEDIO – PRUEBA 1

Monday 15 May 2006 (morning)
Lundi 15 mai 2006 (matin)
Lunes 15 de mayo de 2006 (mañana)

1 h 30 m

TEXT BOOKLET – INSTRUCTIONS TO CANDIDATES

- Do not open this booklet until instructed to do so.
- This booklet contains all of the texts required for Paper 1.
- Answer the questions in the Question and Answer Booklet provided.

LIVRET DE TEXTES – INSTRUCTIONS DESTINÉES AUX CANDIDATS

- N'ouvrez pas ce livret avant d'y être autorisé(e).
- Ce livret contient tous les textes nécessaires à l'épreuve 1.
- Répondez à toutes les questions dans le livret de questions et réponses fourni.

CUADERNO DE TEXTOS – INSTRUCCIONES PARA LOS ALUMNOS

- No abra este cuaderno hasta que se lo autoricen.
- Este cuaderno contiene todos los textos para la Prueba 1.
- Conteste todas las preguntas en el cuaderno de preguntas y respuestas.

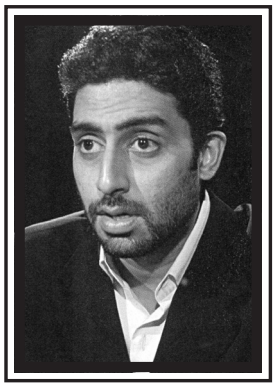

पाठांश क: "अभी मेरी अपनी पहचान नहीं बनी है"

फिल्म अभिनेता अभिषेक बच्चन (मशहूर अभिनेता अमिताभ बच्चन का बेटा) से बातचीत:

प्रश्न: (उदहारण)
अभिषेक: मेरी पीढ़ी के सारे एक्टर पहले एक्टर ही बनना चाहते हैं, स्टार बाद में। हर कोई पहले एक्टिंग ही सीखना चाहता है।

प्रश्न - १ -:
अभिषेक: मेरी पहली फ़िल्म जे.पी.दत्ता की *रिफ्युजी* थी। उस वक्त मैं बॉस्टन में पढ़ रहा था। काम मिलने पर बड़ी ख़ुशी हुई क्योंकि डैडी की एबीसीएल बुरे दौर से गुजर रही थी। मैं उनकी मदद करना चाहता था। मैं सब छोड़कर आ गया। *मेजर साब* में मैं प्रोडक्शन ब्वॉय था। मैं कलाकारों को लाता-ले जाता और चाय बनाता। उसके बाद साल भर तक बेरोजगार रहा।

प्रश्न - २ -:
अभिषेक: ऐसा करके आप खुद को ही धोखा देते हैं। मैं अपने बूते पर काम पाना चाहता था। २२-२३ साल का नौजवान था, ऊर्जा से भरपूर। मेरे लिए बहुत सारी दिक्कतें आई। फिल्म इंडस्ट्री आपको बहुत कुछ सिखाती है और आप अपनी गलतियों से भी काफी कुछ सीख सकते हैं।

प्रश्न - ३ -:
अभिषेक: मैं हमेशा ही उनका बेटा रहूँगा। अभी मेरी पहचान नहीं बनी है। मुझे अपने पिता के साये में ही रहना है और मुझे इससे कोई दिक्कत भी महसूस नहीं होती।

प्रश्न - ४ -:
अभिषेक: वह मेरी एक्टिंग नहीं थी। मणि साहब और साथी कलाकारों की वजह से वह सब हो पाया। फिल्म निर्माण एक सामूहिक काम है।

प्रश्न - ५ -:
अभिषेक: मैं उस दिन का इंतज़ार कर रहा हूँ जब मैं हॉल में अपनी फिल्म देखने जाऊँ और वहाँ मुझे मेरे काम को शाबाशी मिले।

पाठांश ख : "सुंदरता और संतुलन का अद्‌भुत संगम - कथक नृत्य"

कथक को उर्दू और खड़ी बोली की कविताओं के खूबसूरत नाट्य रूपांतरण के रूप में पहचाना जाता है। ब्रज भाषा भारतीय-इस्लामी संगीत और नृत्य का संगम है। यह जुगलबंदी गंगा-जमुनी सभ्यता का सबसे बेहतरीन नमूना है।

औरंगज़ेब से पहलेवाले मुगल राजाओं ने कथक नृत्य को दरबार में उत्सव मनानेवाले रूप में अपनाया था। मुगल प्रभाव के साथ कथक स्त्री तथा पुरुष दोनों द्वारा किया जाता है। कुछ परिवर्तन प्रोत्साहनों की तरह कथक आज तक जीवित है। आमद या सलामी देनेवाला प्रवेश एकदम मुगल शैली का है। नर्तक की पोशाक हिंदू-पर्शियन फ़ैशन से प्रेरित है। तंग पायजामे जैसी चूड़िदार कथक के उन शाही दिनों की याद दिलाते हैं। इस शानदार पोशाक में चक्कर लेने से नर्तक का फन बहुत सुंदर लगता है।

कथक में चक्कर, सुर-ताल, संतुलन और सुंदरता का अद्‌भुत संगम है। इसके आवश्यक तत्त्व आत्मा, शरीर और दिमाग में एकता को प्रोत्साहित करने के लिए शरीर की ऊर्जा सुस्थिर होनी चाहिए।

कथक नृत्य और अभिनय के सुशील मिश्रण की तरह उत्पन्न हुआ है। सुर-ताल और भाव-भंगिमा कथक के राजा और रानी हैं। लखनऊ घराने के खजाने की चाबियाँ संभालने वाले इन रचनाओं को पीढ़ी-दर-पीढ़ी सौंपते जाते हैं। उनमें से अधिकतर महान उस्तादों बिंदादीन और कालका द्वारा रची गई थी। इस अनुकरणीय परिवार से संबंधित बिरजू महाराज एक जिंदा मिसाल है जिन्होंने शताब्दियों पुरानी इस उत्तर भारतीय नृत्य शैली को पैना किया।

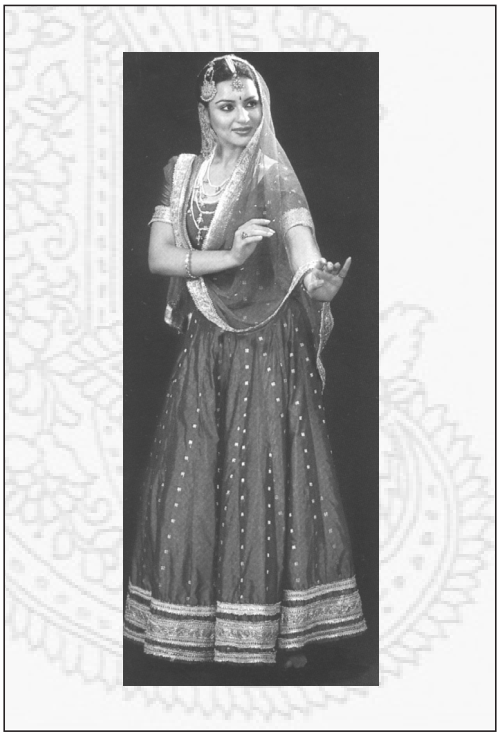

पाठांश ग: "छोटे कंधों पर बड़ी ज़िम्मेदारी"

जिस समय दुनिया भर के बच्चे स्कूल जाने की तैयारी कर रहे हैं उस समय बिलासपुर के साढ़े पाँच साल के सौरभ नागवंशी को राजधानी रायपुर जाने की हड़बड़ी रहती है, जहाँ उसका दफ़्तर है।

चौंक गए न ! भला साढ़े पाँच साल का बच्चा कौनसे दफ़्तर जाता होगा! लेकिन यह सच है। सौरभ नौकरी करता है और वह भी सरकारी।

जिस पुलिस और थाने का नाम लेकर बच्चों को डराया जाता है, सौरभ उसी पुलिस विभाग में बाल आरक्षक के पद पर कार्यरत है। इस मासूम बच्चे को देखकर विश्वास करना मुश्किल है कि यह कोई नौकरी करता है। लेकिन सौरभ को अपनी माँ की ऊंगलियाँ और कंधे पर परिवार के पाँच सदस्यों की ज़िम्मेदारी थामे नौकरी करनी पड़ती है।

देश के अधिकांश सरकारी कर्मचारियों की सेवा सुविधा में आकस्मिक मृत्यु होने पर उसके किसी एक परिजन को अनुकंपा नियुक्ति देने का प्रावधान है। पुलिस विभाग में भी इस नियम के तहत नियुक्ति दी जाती है तो उसे एक दिन दफ़्तर और दूसरे दिन स्कूल जाना होता है।

कुछ मामलों में बच्चे को प्रतिदिन दफ़्तर आना होता है। आम तौर पर दफ़्तर में उनसे फ़ाइलें और चाय-पानी लाने का काम लिया जाता है। इस काम के बदले उन्हें लगभग ढाई हज़ार रुपए वेतन दिया जाता है।

ऐसे बाल आरक्षकों के लिए १८ वर्ष की उम्र तक आठवीं-दसवीं की परीक्षा पास करना अनिवार्य है जिसके बाद ही उन्हें पुलिस विभाग में स्थायी किया जाता है। स्थायी करने के बाद ही इन बाल आरक्षकों को पूरा वेतन दिया जाता है। जिस उम्र में बच्चे अक्षरों को पहचानना सीखते हैं उस उम्र में सौरभ सब से पहले वेतन के लिए अपना हस्ताक्षर करना सीखता है।

सौरभ की माँ ईश्वरी देवी कहती हैं: "घर-परिवार चलाने के लिए कोई दूसरा चारा भी तो नहीं है। इतने से बच्चे से नौकरी कराना किसे अच्छा लगता है! अभी तो इसके खेलने-कूदने के दिन थे।"

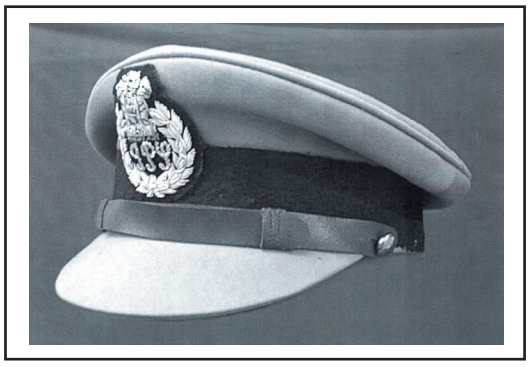

पाठांश घ: "दिल्ली का दर्द"

यह दिल्ली के एक अख़बार से लिया गया पृष्ठ है जिसपर दिल्ली के रहनेवाले अपनी बात प्रस्तुत कर सकते हैं।

१. यमुना पुश्ते से गीता कालोनी की ओर जानेवाले रास्ते पर जब से पेट्रोल पंप बने हैं तब से इस रास्ते पर ज़्यादातर इस रास्ते पर ट्रैफिक जाम होने लगा है। अब तो पेट्रोल पंप के पास एक स्कूल बन रहा है। पेट्रोल पंप से स्कूल जाने वाले बच्चों को नुकसान पहुँचेगा। रास्ता पार करना अधिक कठिन होगा क्योंकि ट्रैफिक बढ़ जाएगा, और इसके अलावा पेट्रोल की बू भी आएगी। लोगों को आने-जाने में काफी परेशानी होती है। संबंधित अधिकारी ध्यान दें।

२ किलोकरी गाँव एक कूड़ाघर बनाया हुआ है। इस कूड़ेघर में सारे क्षेत्र का कूड़ा डाला जाता है। कुत्ते-गाय यहाँ रात-दिन कूड़ा फैलाते रहते हैं। इससे लोगों को बहुत परेशानी होती है।

३ संगम विहार में बिजली संकट से यहाँ के नागरिक परेशान हैं। बिजली कई-कई घंटे गुल रहती है। बिजली न आने से छात्रों की पढ़ाई पर बुरा असर पड़ रहा है। वे रात को पढ़ नहीं पाते और होमवर्क करने में भी दिक्कत है। शिकायत करने पर भी कुछ नहीं होता।

४. माडल टाऊन के पार्क में कुछ लोग ऊंची आवाज में डैक बजाते हैं। इससे स्थानीय लोगों को काफी परेशानी होती है। पूरे क्षेत्र में ध्वनि प्रदूषण फैल रहा है। बूढ़े लोगों की तबियत इससे खराब हो जाती है। बच्चों की पढ़ाई भी नहीं हो पाती। कुछ कहते हैं तो भी नहीं मानते हैं।

५ मंगोलपुरी की कुछ गलियों में गंदगी की भरमार है। नालियाँ गंदगी से भरी पड़ी हैं। सफाई कई कई दिनों तक नहीं होती। मारे बदबू के बुरा हाल है। इसकी वजह से मेरी बेटी को साँस लेने में दिक्कत होती है - वह पढ़ाई पर ध्यान कैसे देगी?। सफाई करनेवालों को रोज़ के रोज़ आना चाहिए!

६. तिगड़ी कालोनी के पार्क की हालत ख़स्ता है। जहाँ-तहाँ कूड़े के ढेर लगे हैं। यह पार्क सड़क से काफी नीचे है। इस पार्क में बरसात का पानी भर जाता है। पानी निकलने का कोई रास्ता नहीं है।

७. नेहरू नगर में पानी की कमी है। पानी तो पिछले कुछ दिनों से नहीं आ रहा है। लोगों का नहाना-धोना मुश्किल हो गया है। मेरे बच्चे बिना नहाए स्कूल कैसे जाएँ? पति के दफ़्तर के कपड़े कैसे धोऊँ? बच्चों की यूनिफार्म भी गंदे हो गए हैं। हमें इनके लिए बोतल का पानी खरीदना है जो बहुत महँगा होता है।